मन के दस कमरे

बुद्धि — समझ

एक ऐसा घर है जिसमें हम सब रहते हैं, बिना कभी उसे चुने।

उसका कोई पता नहीं। वह किसी नक़्शे पर नहीं मिलता। फिर भी हम उसे किसी भी सच्चे घर से बेहतर जानते हैं।

भीतर दस दरवाज़े हैं।

कुछ हम हर दिन खोलते हैं, बिना जाने।

कुछ हम बंद रखते हैं, यह दिखावा करते हुए कि उनसे हमारा कोई नाता नहीं।

और फिर कुछ कमरे ऐसे हैं जिन्हें हमने ख़ुद नहीं बनाया, फिर भी वे किसी तरह हमारे भीतर बसे रहते हैं।

यह कोई सिद्धांत नहीं है।

यह मनोविज्ञान की कोई किताब नहीं जो शेल्फ़ पर धूल खा रही हो।

यह उस आदमी का विवरण है जो इन दस कमरों में एक-एक करके चला, अक्सर यह जाने बिना कि वह कहाँ है, और जो अब, कुछ और वर्षों के बोझ के साथ, उन्हें ठीक वैसे ही बयान करने की कोशिश कर रहा है जैसे उसने उन्हें जिया।

दस दरवाज़े। मैंने सब खोले।

कुछ जिज्ञासा से। कुछ अनिच्छा से। कुछ तब जब लौटना पहले ही बहुत देर हो चुका था।

अगर ये कमरे परिचित लगें, तो यह इसलिए नहीं कि वे मेरी कहानी कहते हैं।

यह इसलिए है क्योंकि, कहीं गहरे में, वे तुम्हारी भी कहानी कहते हैं।

फर्डिनांडो

बुद्धि — समझ

जिलेट नैरेटिव — नांदो, लेखक

gillettenarrative.com

जवानी में मैं समझता था कि बुद्धिमत्ता जवाबों की बात है। समय के साथ मैंने जाना कि वह असल में सवालों की चीज़ है। मैं ऐसे पढ़े-लिखे लोगों से मिला जो सब कुछ जानते थे। और ऐसे सीधे-सादे लोगों से भी जो सब कुछ समझते थे। दोनों के बीच का फ़र्क़ बहुत बड़ा था। पहले बस बटोरते थे। दूसरे समझते थे।

सच्ची बुद्धिमत्ता हमला नहीं करती। वह देखती है। वह फ़ैसला सुनाने में जल्दबाज़ी नहीं करती। वह इंतज़ार करती है। वह बंद दरवाज़े से ज़्यादा एक खुली खिड़की जैसी होती है। आप उसे छोटी-छोटी बातों में पहचान लेते हैं। उसे कभी जल्दी नहीं होती। क्योंकि वह जानती है कि हक़ीक़त लगभग हमेशा हमारी रायों से कहीं ज़्यादा उलझी हुई होती है। और जो सचमुच बुद्धिमान होते हैं, वे कभी ख़ुद को श्रेष्ठ नहीं समझते। वे जिज्ञासु महसूस करते हैं। वे जानते हैं कि हर निश्चितता अस्थायी है। हर सच में कोई न कोई छाया छिपी होती है। और समझना, बोल देने से कहीं ज़्यादा कठिन है। फिर किसी ने खोज निकाला कि बुद्धिमत्ता को धंधा बनाया जा सकता है। उसे नापा गया। वर्गीकृत किया गया। डिब्बों में बंद किया गया। बेचा गया। परीक्षाएँ, आँकड़े और रैंकिंग सामने आ गईं। मानो किसी दिमाग़ को एक अंक तक समेटा जा सकता हो। मानो बुद्धिमत्ता किसी प्रश्नावली के भीतर बसती हो। आज बहुत-से लोग यह सुनने के लिए पैसे चुकाते हैं कि वे बुद्धिमान हैं। यह एक ख़ूब फलता-फूलता बाज़ार है। फिर भी उस पुष्टि की यह ज़रूरत ही अपने-आप में सोचने पर मजबूर कर देनी चाहिए—वह पहला असली सवाल, जो कोई परीक्षा कभी नहीं पूछेगी।

फर्दिनांदो

 © 2026 Gillettenarrative.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।